* कॉम्ट द्वारा प्रतिपादित 'समाजशास्त्र' की अवधारणा।
('Concept of Sociology' as proposed by Comte.)

Ans- कॉम्ट अपने समय में प्रचलित तात्विक तथा धार्मिक प्रविधियों तथा सामाजिक घटनाओं की अध्ययन प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे। कॉम्ट वैज्ञानिक पद्धति को सर्वोच्च प्रधानता प्रदान करते थे। वे इसलिए सामाजिक अध्ययन कार्य को भी निरीक्षण, परीक्षण तथा वर्गीकरण की व्यवस्थित या वैज्ञानिक कार्य-प्रणाली के अन्तर्गत लाने के पक्ष में थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कॉम्ट एक ऐसे नये विज्ञान का सृजन करना चाहते थे जो कि उस समय प्रचलित धार्मिक तथा तात्विक विचारों से पूर्णतया विमुक्त हो और जो सामाजिक घटनाओं का अध्ययन एक विशेष अध्ययन क्षेत्र हो और इसे वैज्ञानिक ढंग से करे। इनका विश्वास था कि सामाजिक घटनाओं का अध्ययन एक विशेष अध्ययन क्षेत्र है जो कि व्यक्ति के सामूहिक जीवन की अभिव्यक्ति होती है। कॉम्ट ने इस विज्ञान को सर्वप्रथम "सामाजिक भौतिकी" (Social physics) की संज्ञा दी और फिर उसको बदलकर सन् 1838 में अपने नवीन विज्ञान का नाम 'समाजशास्त्र' रखा।

समाजशास्त्र की परिभाषा कॉम्ट ने इस प्रकार की है- "समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था और प्रगति का विज्ञान है।" (Sociology is the Science of Social order and progress) इसमें उन्होंने 'व्यवस्था एवं प्रगति' की व्याख्या करते हुए कहा है कि - समाज एक 'व्यवस्था' है इस व्यवस्था के अन्तर्गत अनेक उपव्यवस्थाएँ होती हैं। इसी रूप में भी कहा जा सकता है कि समाज एक अखण्ड व्यवस्था नहीं है बल्कि अनेक भागों से मिलकर बना है। ये सभी एक दूसरे पर आधारित हैं और दूसरे से सम्बन्धित हैं। इस आधार पर कॉम्ट ने सामाजिक सावयव

Kajol

(Social organism) की कल्पना की थी।
इन्होंने व्यक्तिक सावयव और सामाजिक सावयव को एक ही समझने की भूल न करने की कड़ी चेतावनी भी इन्होंने बार-बार देते रहे हैं। इनका मत है कि दो प्रकार के सावयवों में समानताएं हो सकती है और है भी, पर ये एक ही नहीं है। सामाजिक सावयव में, व्यक्तिक सावयव की भाँति श्रम-विभाजन तथा विशेषीकरण होता है। दोनों में ही एकमत्य पाया जाता है जिसका अर्थ कॉम्ट के अनुसार, अन्योन्याश्रित भागों में सामंजस्य का होना है। यही सामंजस्य सामाजिक व्यवस्था का आधार है। समाजशास्त्र सामाजिक जीवन की इसी व्यवस्था के बीच पायी जाने वाली सामंजस्य का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र यहीं तक सीमित नहीं है क्योंकि यह सामाजिक व्यवस्था का ही नहीं अपितु नैतिक आधार भी प्रगति है। मानव का बौद्धिक तथा नैतिक विकास ही सामाजिक प्रगति है। समाजशास्त्र उन नैतिक नियमों या सिद्धान्तों को भी प्रतिपादित करता है जिनके आधार पर सामाजिक प्रगति संभव हो सके। यह स्मरण रहे कि एक प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था में, कॉम्ट के अनुसार सबसे अधिक महत्वपूर्ण वर्ग पुरोहित का होना चाहिए। परन्तु ये पुरोहित धर्मशास्त्री नहीं बल्कि समाजशास्त्री होंगे जिनका कि प्रमुख कार्य उन समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना होगा, जिनपर सामाजिक प्रगति की व्यापक नीति निर्भर करेगी। इसलिए कॉम्ट का समाजशास्त्र सामाजिक व्यवस्था व प्रगति का विज्ञान है।

कॉम्ट का समाजशास्त्र समाज का एक अमूर्त विज्ञान है। यह केवल मात्र आर्थिक, राजनीतिक, वैधानिक या अन्य किसी विशिष्ट प्रकार की घटनाओं का विज्ञान नहीं है। यह वह विज्ञान है जो कि उन आधारभूत नियमों को खोजता है जिन पर की समस्त सामाजिक विज्ञान आधारित है।

कॉम्ट का समाजशास्त्र एक समन्वयात्मक विज्ञान भी है इन्होंने इसे समन्वयात्मक विज्ञान इस कारण कहा है कि समाजशास्त्र सामाजिक जीवन को किसी भी विशिष्ट पक्ष का अध्ययन नहीं करता है, यह तो समाज का अध्ययन समग्र रूप में करता है। समाजशास्त्र का सम्पर्क केवल आर्थिक, धार्मिक, नैतिक या वैधानिक घटनाओं से नहीं है। यह तो इन सब से सम्बंधित है और इन सब का अध्ययन करता है। कॉम्ट का विश्वास है कि सामाजिक जीवन के विभिन्न अंग या भाग एक-दूसरे से अत्यधिक घनिष्ट रूप से सम्बंधित तथा एक दूसरे पर आश्रित है इस कारण इनका पृथक् अध्ययन

उचित नहीं है। समाजशास्त्र ही इन विभिन्न भागों को एक साथ मिलाकर अध्ययन कर सकता है और करता है। इसलिए यह एक समन्वयात्मक विज्ञान है।

समाजशास्त्र एक समन्वयात्मक विज्ञान इस अर्थ में भी है कि यह अपने से पहले सभी विज्ञानों — प्राणिशास्त्र, रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, खगोलशास्त्र तथा गणितशास्त्र — द्वारा प्रतिपादित नियमों और सिद्धान्तों पर आधारित है। अपने आधारभूत विज्ञानों का संस्तरण में कॉम्ट ने समाजशास्त्र को सबसे ऊपर रखा है। इसका उद्देश्य यह नहीं है कि वह समाजशास्त्र को अन्य विज्ञानों की मालकिन के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है। समाजशास्त्र की सबसे ऊपर की यह स्थिति केवल इस बात की द्योतक है कि यह विज्ञान अपने से पहले वाले सभी विज्ञानों पर आधारित रहते हुए इनके समस्त नियमों या सिद्धान्तों को अपने में समेटता है। चूंकि समाज उन जीवित प्राणियों से बना हुआ है जिनका शरीर ब्रह्माण्ड के पदार्थ से बनता है, इस कारण समाजशास्त्र का प्रारंभ भी इनसे सम्बन्धित विज्ञान के नियमों से होता है। कॉम्ट ने लिखा है कि "सर्वप्रथम उस माध्यम को, जिससे सामाजिक जीवन विकसित हुआ है और उन प्राणियों को भी इसे प्रकट (Manifest) करते हैं, समझे बिना सामाजिक जीवन को समझा नहीं जा सकता। इस कारण अंतिम विज्ञान (समाजशास्त्र) में हम तब तक कोई प्रगति नहीं कर सकते जब तक हमें बाहरी दुनिया और व्यक्तिक जीवन के सम्बन्ध में पर्याप्त अमूर्त ज्ञान इन नियमों का सामाजिक घटनाओं के विशिष्ट नियमों पर पड़ने वाले प्रभाव को परिभाषित करने के लिए पर्याप्त न हो जायेगा।"

चूंकि कॉम्ट के अनुसार समाजशास्त्र एक विज्ञान है, इसलिए यह एक भविष्यवाणी करने योग्य विज्ञान भी है। यदि यह भविष्यवाणी करने की क्षमता नहीं रखता है तो इसे विज्ञान होने का भी अधिकार नहीं। पूर्व-ज्ञान या भविष्य-दर्शिता विज्ञान की कसौटी है। वैज्ञानिक नियम हमें इस बात का ज्ञान करवाते हैं कि भविष्य की सम्भावित प्रक्रियाएं किस प्रकार की होंगी। वर्तमान सामाजिक अवस्था का अध्ययन करके उसी आधार पर उसके भविष्य के सम्बन्ध में बताना समाजशास्त्र का एकमुख्य कार्य है।

इसमें सन्देह नहीं कि कॉम्ट ने अपने समाजशास्त्र का निर्माण वैज्ञानिक प्रणालियों की सहायता से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन करके उनके विषय में ज्ञान भण्डार को बढ़ाने के उद्देश्य से किया है। परन्तु यही कारण उसका एकमात्र उद्देश्य नहीं है।

कॉम्ट ने समाजशास्त्र को सामाजिक पुनर्निर्माण और नैतिक जागृति लाने का नवीन कार्यक्रम में भी काम में लाना चाहते हैं। उनका विश्वास है कि मानव जीवन के सम्बंध में ज्ञान की वृद्धि मात्र बिल्कुल व्यर्थ है, यदि उस ज्ञान का उपयोग उसके जीवन को उन्नत करने के लिए न किया जाए। यह सच है कि एक वैज्ञानिक सदैव ही यह प्रयत्न करता है कि वह सत्य को अधिकाधिक जान ले। परन्तु यह भी गलत नहीं है कि वह सत्य को इसलिए जानना चाहता है कि उस सत्य को प्रकट करने में मानव का कुछ कल्याण होगा। कॉम्ट भी इसी प्रकार का वैज्ञानिक है। कॉम्ट को यह भी विश्वास है कि मानव जीवन का कुछ नैतिक उद्देश्य होता है इन नैतिक उद्देश्यों की पूर्ति मानवता के धर्म (The Religion of Humanity) की स्थापना के द्वारा ही संभव है। यही कारण है कि कॉम्ट के आदर्श समाज में सबसे महत्वपूर्ण वर्ग पुरोहित का होगा और ये पुरोहित धर्मशास्त्री नहीं बल्कि समाजशास्त्री होंगे। समाजशास्त्री मानवता के सेवक बने, यही कॉम्ट के आन्तरिक अभिलाषा के अनुसार, समाजशास्त्र के चरम सार्थकता है।

समाप्त